

2275. विकुर्वाणौ कयाश्चित्रा: 14, 1484. med. wenn das obj. einen *Laut* bezeichnet P. 1, 3, 34. Vop. 23, 27. विकुर्वाणः स्वरान् BHATT. 8, 20. med. intrans. in mannigfacher Weise verfahren 21. विकृतौ (Gegens. शुद्ध) व-धः eine durch mannigfache Verstümmelungen geschärfte Todesstrafe M. 9, 291. — 4) mannigfach ausschmücken, auslegen: कवचानि महार्कणि वैद्वर्षविकृतानि MBu. 1, 1429. सुवर्णविकृतानीमान्यापुधानि 4, 1367. — 5) hin und her bewegen: भुजौ दीर्घा विकुर्वाणम् R. 3, 74, 18. पौदो विकुरुते Suçr. 1, 113, 15. sich hin und her bewegen, eine Unruhe an den Tag legen: नेत्राभ्यां विकुर्वाणम् 121, 18. — 6) zertheilen, verbreiten: वि भा श्रक्तः समज्ञानः पृथिव्याम् RV. 7, 8, 2. स त्रेधातमानं व्यकुरुत Çat. Br. 10, 6, 5, 3. — 7) zu Grande richten, zerstören: शत्रैर्मथ्यता कृष्णवन्वि नृणाम् RV. 7, 48, 3. अन्यथैव हि मन्यते पुरुषास्तानि तानि । अन्यथैव प्रभुस्तानि करोति विकरोति च MBu. 3, 1150. — 8) sich feindlich beweisen, feindlich gesinnt sein, feindlich auftreten; med. und mit dem gen. oder loc. der Person: यस्माद्विजते लोकः कथं तस्य भवो भवेत् । अन्तरं तस्य दृष्टेव लोको विकुरुते ध्रुवम् MBu. 3, 1050. (मित्राणि) हीनान्यनुपकर्तृणि प्रवृद्धानि विकुर्वते Ragh. 17, 58. ब्रह्मदत्तो विकुर्वति यदि KATHAS. 20, 219. विकुर्वाणो मुनोनां च व्यचरत्स महीमिमाम् MBu. 3, 10741. KATHAS. 19, 53. von der Untreue der Frauen: भर्तृघेता विकुर्वते M. 9, 15. वालभावादिकुर्वति (act.) प्रायशो प्रमदाः MBu. 3, 17023. sich beflehen: यस्या पूर्वं पूर्वज्ञा विचक्रिरे AV. 12, 1, 5. तेने यस्या विकुर्वते 43. उभौ विनिश्चयं कृत्वा विकुर्वति वधिषिणौ MBu. 1, 7670. — caus. bewirken, dass Jmd sich umwandelt, seine Gesinnung ändert: केनायं राजा ममोपरि विकारितः Hit. 73, 11.

— अनुचि nachgestalten Çat. Br. 2, 3, 4, 8.

— सम् und संस् (संचस्कारिय, संस्कारिम, संस्क्रियात्, संस्क्रषीष्ट, समस्कृत Siddh. K. zu P. 6, 1, 135. 7, 4, 10, VArtt. 1, Sch. 7, 2, 13, VArtt. 7, 4, 29, Sch. Vop. 8, 88, 89) 1) zusammenfügen, verbinden: समिन्द्र गो-भिर्मधुमत्तमक्रन् RV. 3, 33, 8. इयं समस्कुरुत TS. 6, 2, 2, 1. Ait. Br. 1, 25. med. auf sich häufen (?): सतो ऽपि नष्टा ध्रुवम् । ये पत्तापरपक्षेदाषस-हिताः पापानि संकुर्वते Māṇu. 137, 20. संस्कार = समवाये P. 6, 1, 138. तत्र न संस्कृतम् Sch. — 2) zubereiten, conficere, bilden, zurüsten: पित्रे चिञ्चक्रुः सदनं समस्मै RV. 3, 31, 12. न संस्कृतं प्र मिमीतो गर्मिष्ठा 5, 76, 2. इन्द्राय वृक्षे समकारि सोमः 6, 41, 3. इन्द्रेण वा एतैर्यजमान आत्मानं सं-स्कुरुते Ait. Br. 6, 27, 29. ये भूतानि समकृषवन्निमानि RV. 10, 82, 4. TS. 5, 6, 3, 4. पदेभ्यः पदेतरार्धात्संचस्कार Nir. 1, 13. रणाय संस्कृतः gerüstet (vgl. संस्कृत = व्युत्पन्न, प्रकृत, लुप्त H. 343) RV. 8, 33, 9. — तस्या-स्थिभिर्महाधोरं वज्रं संक्रियतां दृढम् MBu. 3, 8698. सौवर्णानि च भाण्डानि संचक्रुस्तत्र शिल्पिनः 14, 215. तस्मिन्संक्रियमाणे तु राघवस्याभिषेचने R. 3, 33, 3. zubereiten (von Speisen): मांसं संस्कृत्य MBu. 1, 6728. पलमूला-मिषं शाकं संस्कृतं यन्महानसे 3, 203. पुत्रं संस्कारु 13321. fg. R. 2, 96, 36. 3, 16, 15. आष्ट्रे संस्कृता यवाः, प्रूले, दध्नि, उद्विष्टि, क्षीरे संस्कृतम् P. 4, 2, 16—20. दध्ना, कुलत्थैः 4, 4, 3, 4. H. 410. एनम् — प्रभूतशुण्डादिभिः संस्कृत्य PAKKAT. 262, 13. संस्कृत = कत्रिम AK. 3, 4, 44, 84. H. an. 3, 303. Med. t. 163. सुसंस्कृत schmackhaft zubereitet AK. 2, 9, 45. H. 411. — 3) nach den heiligen Bräuchen ordnen, behandeln; weihen: पुनः संस्कृत्य प्रोक्षणीः Çat. Br. 10, 2, 2, 13. आवातायं संस्कृत्य 14, 9, 2, 1. स्त्री पुमांसं संस्कृते तिष्ठतमप्यैति 3, 2, 1, 22. असंस्कृतान्यप्रूनन्तैः M. 5, 36. यज्ञ R. 5,

II. Theil.

89, 19. घनल AK. 2, 7, 19. H. 826. einen Jüngling (durch Umagürtung mit der heiligen Schnur) weihen: संचस्कार — मैथिल्यौ यथाविधि Ragh. 15, 31. संस्कृत M. 8, 412. MBu. 13, 361. असंस्कृतास्तु संस्कार्या भ्रातृभिः पूर्वसंस्कृतेः Jāṣṇ. 2, 124. संस्कृतात्मन् M. 2, 164. 10, 110. असंस्कृत 2, 39. 11, 36. ein Mädchen (bei der Hochzeit) weihen: या गर्भिणी संस्कृयते M. 9, 173. स्वे तेने संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्वि यम् । तमैरसं विज्ञानी-यात्पुत्रम् 166. स्त्रीणामसंस्कृतानाम् 3, 72. घनता च तता चैव पुनर्भूः सं-स्कृता पुनः Jāṣṇ. 1, 67. einen Verstorbenen (mit den heiligen Feuern) weihen: पत्नौ पूर्वमारिणीमग्निभिः संस्कृत्य Çāṅku. Çr. 4, 13, 32. GRUJA-SAMGR. 2, 4, 5. PAKKAT. 9, 2. काष्ठसंचयैः संस्कृतः 173, 2. प्रेतस्य शरीरं भि-तया वसनेनालंकारेणेति संस्कृतिः Kūṇḍ. Up. 8, 8, 5. प्रेतकार्येषु सर्वेषु सं-स्कारिष्यति राघवम् R. 2, 51, 18. 86, 18. संस्कृत्य च कुरुश्रेष्ठम् MBu. 13, 7777. यैः पिता संस्कृतः R. 2, 72, 29. संस्कृत als subst. n. heiliger Brauch: श्रवलुच्य जलमेकां जुहुवाद्यौ सुसंस्कृतेः MBu. 3, 10760. — 4) aufputzen, schmücken, verzieren P. 6, 1, 137. ककुभं समस्कुरुत Çic. 9, 25. संस्कृत ge-putzt, geschmückt, verziert, schmuck: सुसंस्कृतोपस्कारा die die Haus-geräthe recht sauber hält M. 5, 150. सुसंस्कृतं गृहम् R. 3, 61, 7. कुण्डले 5, 19, 12. (अस्या द्वयम्) असंस्कृतमभिव्यक्तं भाति काञ्चनसंनिभम् N. 17, 7. असंस्कृता कन्या PAKKAT. III, 218. स्वभावात्संस्कृता शुभा (अवधौ) R. 3, 52, 30. von einer Rede: संस्कृतं हेतुसंपन्नमर्थवच्च यदुक्तवान् 5, 82, 3. 6, 104, 2. वाण्येका समलं करोति कृतिनं या संस्कृता धार्यते BHART. 2, 16. die schmucke Rede der höheren Kasten ist das Sanskrit: यदि वाचं वदि-प्यामि (Hanūmant spricht) द्विजातिरिव संस्कृताम् R. 5, 29, 17. तस्माद-क्षाम्यहे वाक्यं मनुष्य इव संस्कृतम् 34. धारयन्त्राक्षणां द्वयमित्त्वलः संस्कृतं (n. mit Ergänzung von वाक्य) वदन् 3, 16, 14. संस्कृतया गिरा KATHAS. 7, 2. संस्कृतं प्राकृतं तद्वद्देशभाषा 6, 148. पाठ्यं संस्कृतोक्तिषु Hit. Pr. 2. सं-स्कृतमाश्रित्य Çāṅ. 48, 7. DUCRTAS. 76, 20. 83, 7. H. 283. Nach den Lexicographen (AK. 3, 4, 44, 84. H. an. 3, 308. Med. t. 163) ist संस्कृत = ल-क्षणान्वित, भूषित und glatt. — caus. 1) anrichten —, zurüsten lassen: विवाहे समकारयत् MBu. 1, 4379. — 2) Jmd zu Etwas machen, mit zwei acc.: एष सर्वान्महोपालान्करदानसमकारयत् MBu. 4, 2281. — 3) weihen lassen: दमघोषात्मजं वीरं संस्कारयत माचिरम् MBu. 2, 1594. पाण्डुं (verstorben) संस्कारयामास देशे परमयज्ञेते 1, 4936. — desid. संचिचोर्षति Vop. 12, 3. 19, 3. — intens. संचिचोर्षते Vop. 20, 4.

— अभिसम् 1) zurechtmachen, bilden: पूर्वार्थमेवैतद्यज्ञस्याभिसंस्कारेति Çat. Br. 3, 2, 2, 23. 4, 1, 26. 6, 7, 2, 6. पश्य आनन्द कियतं ते मोक्षयुग्मा वक्षुपुण्याभिसंस्कारमभिसंस्कारिष्यति Lalit. bei Burn. Intr. 304, N. 3. — 2) Jmd zu Etwas machen: इमानेवात्मानमभिसंस्कारवै Çat. Br. 6, 2, 1, 5. 9. 8, 2, 1. नेदार्तात्मानमभिसंस्कारवै 8, 7, 2, 16. 10, 4, 2, 22. — 3) weihen: ए-षा यज्ञभूमिर्हि देवानामभिसंस्कृता MBu. 3, 8224. महीधरम् — अभिसंस्कृ-ते राजर्षिणा पुण्यकृता गयेन 8518. वारि 16476.

— उपसम् 1) zubereiten, von Speisen: अन्नमुपसंस्कृतम् MBu. 1, 7203. मांसम् 3, 2944. तिलमाषोपसंस्कृताः Suçr. 1, 235, 14. — 2) zurechtmachen, putzen: उपसंस्कृतशरीरं Suçr. 2, 76, 9. 158, 4.

— प्रतिसम् 1) wieder in Stand setzen: तद्वापि प्रतिस्कुर्वात् M. 9, 279. — 2) Etwas mit Etwas verbinden: तत्र कृशमन्त्रपानप्रतिस्कुताभिः क्रियाभिश्चिकित्सेत् Suçr. 2, 77, 2. Bei कङ्कट führt ÇKD. als Beleg für diese Form an: इत्युणादिकोषः । प्रतिस्कुतेनामरश्च d. i. in Verbindung